इतना-सा दिमाग और इतने सारे शब्द

रमाकान्त अग्निहोत्री

क्या कभी ऐसा हुआ है कि तुम किसी चीज़ के सामने खड़े हो और तुम्हें उस चीज़ का नाम याद ना आए? या फिर ऐसा कि तुम्हारे सामने कोई काम-काज हो रहा हो और तुम्हें उसके बारे में बात करने में मुश्किल हो? जैसे, तुम्हारे सामने एक कुत्ता है और वह भाग रहा है तो क्या तुम बाबा या गुरुजी से जाकर पूछोगे कि यह कौन है और क्या कर रहा है? ऐसा तो नहीं होता है ना! होता यह है कि तुम आसमान में चमकने वाली बिजली से भी जल्दी से पूरा वाक्य बोल जाते हो, "वो देखो, एक काला कुत्ता मोहन के पीछे भाग रहा है।"

ऐसे ही हज़ारों-लाखों शब्द हम सबके दिमाग में हर वक्त रहते हैं और उन्हें याद रखने के लिए हमें कोई खास मेहनत भी नहीं करनी पड़ती। सचमुच कमाल की बात है यह!

दिमाग में शब्दों का ज़खीरा

सोचने की बात यह है कि क्या इतने सारे शब्द हमारे दिमाग में एक कूड़े के ढेर की तरह पड़े हैं या फिर किसी रूप में सजे हुए, या फिर कई अलग-अलग तरह से व्यवस्थित हैं ये? यहाँ बात खाली शब्द ही जानने की नहीं है। हम जब एक शब्द जानते हैं तो उसके साथ उसके बारे में बहुत कुछ जानते हैं। मान लो, तुम कुत्ता शब्द जानते हो। सबसे पहले तो तुम जानते हो कि उसका उच्चारण कैसे होगा। यह कोई छोटी बात नहीं है। अगर इस शब्द के अन्त में "आ" की जगह "ऐ" हो जाए तो तुम जानते हो कि एक कुत्ते की बजाय बहुत सारे कुत्ते हो जाएँगे। तुम यह भी जानते हो कि यदि कुत्ते के रंग के बारे में बात करनी हो तो रंग बताने वाला शब्द कुत्ते से पहले बोलना पड़ेगा, बाद में नहीं। और अगर यह बताना है कि कितने कुत्ते, एक या दो तो वह शब्द रंग बताने वाले शब्द से भी पहले आएगा। तुम्हें यह भी मालूम है कि कुत्ता अगर एक है तो "भाग रहा है" होगा और अगर बहुत सारे कुत्तों की बात होती तो "भाग रहे हैं" कहना पड़ता।

दिमाग या कि शब्दकोष

क्या दिमाग में शब्द उसी तरह से व्यवस्थित होते हैं जैसे एक शब्दकोष में। एक तरीका तो यह है कि यदि तुम से कहा जाए कि "प" से शुरू होने वाले दस शब्द बोलो, तो तुम्हें कुछ खास मुश्किल नहीं होगीः पागल, पल, पालक, पकड़, पानी... आदि। लेकिन दिमागी शब्दकोष तो किताबी शब्दकोश से बिल्कुल अलग है। किताबी शब्दकोष बहुत सीमित होता है। यह दिखता बहुत बड़ा है लेकिन एक भी नया शब्द नहीं बना सकता। बच्चे तो हर पल नया शब्द बनाते रहते हैं। और भला इतनी तेज़ गति से कौन-सा शब्दकोष शब्द ढूँढकर उनसे वाक्य बना सकता है? हम इतने लम्बे-लम्बे वाक्य बोलते रहते हैं, बच्चों को तो कई बार कहना पड़ता है – बेटा, ज़रा धीरे, बहुत तेज़ बोलते हो, अब चुप भी करो! इसलिए स्वाभाविक है कि हमारे दिमाग में शब्द कई तरह से व्यवस्थित हों – केवल वर्णमाला के आधार पर ही नहीं। हो सकता है कि किसी एक शब्द के साथ कहे जाने वाले शब्द एक डिब्बे में रहते हों। और इस तरह के कई डिब्बे दिमाग में व्यवस्थित हो। जैसे "कुत्ते" के साथ "जानवर, गाय, हाथी.... आदि, काला, भूरा, सफेद आदि.....।" इसी तरह से और भी कई डिब्बे हो सकते हैं। संज्ञा, क्रिया और विशेषण के बड़े-बड़े डिब्बे। यह भी सम्भव है कि शब्द ऐसे डिब्बों में व्यवस्थित हों जैसे – परिवार, स्कूल, दफ्तर, बाज़ार, मन्दिर, मेला....।" आदि।

खैर, असली बात यह है कि तुम हज़ारों शब्द जानते हो और पलक झपकते ही अपनी बातचीत में बिना किसी रोकटोक के उनका इस्तेमाल करते हो। और अपनी भाषा में बोलते समय कभी गलती नहीं करते। और तुम्हारे पास तरीके भी हैं नए-नए शब्द बनाने के। "वाला" शब्द को ही लो। हिन्दी के कोई भी संज्ञा, क्रिया या विशेषण ले लो। उसके साथ "वाला" लगाकर नए शब्द बना लेते हो। घरवाला, खेलनेवाला... इस तरह के सादे से नियमों से तुम असंख्य नए शब्द बना सकते हो। बनाते भी हो।